International Journal of Research
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 09
August 2017

प्रेमचंद की रचनाओं में राष्ट्रीय भावना

डा0 आशा रानी तदर्थ अध्यापक (Adhoc), हिन्दी विभाग, टीकराम गर्ल्ज कॉलेज, सोनीपत, हरियाणा।

प्रेमचंद, हिन्दी के एक सजग साहित्यकार है। इनकी रचनाओं में व्यक्ति विशेष की चारित्रिक विशेषताओं का उद्घाटन, पारिवारिक–सामाजिक परिवेश के चित्र और राष्ट्रीय गतिविधियों की झाँकी सभी मर्मस्पर्शी रूप में है। प्रेमचंद के समय भारत, अंग्रेजों के अधीन था। समस्त भारतीय जनता अंग्रेजों के अत्याचार, दमन एवं शोषण से त्रस्त थी। भारतवासियों का जीवन दिन–प्रतिदिन त्रासदियों एवं कष्टों से घिरता जा रहा था। देश की अधिकांश जनता अशिक्षित थी। शिक्षित लोगों के पास भी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता नहीं थी। अंग्रेजी सरकार के विरूद्ध कुछ भी बोलने एवं लिखने का मतलब था, जेल जाना। प्रेमचंद के लिए अंग्रेजों के विरूद्ध कुछ लिखना और भी मुश्किल था, क्योंकि वे सरकारी सेवा में थे। आरम्भ में वे सरकारी विद्यालय में शिक्षक थे, फिर स्कूल–सब–इंस्पेक्टर हुए। फलस्वरूप प्रेमचंद ने नाम बदलकर लिखने का निश्चय किया। प्रेमचंद का सर्टिफिकेट नाम धनपत राय था। यही धनपत राय उर्दू में नबाब राय और हिन्दी में प्रेमचंद हुए। धनपत राय ने पहले उर्दू में नबाब राय नाम से लिखना शुरू किया। इनका पहला कहानी– संग्रह 'सोजे–वतन' सन् 1908 में प्रकाशित हुआ। इसकी पहली कहानी थी– 'संसार का अनमोल रत्न'। इसकी कहानी में देशभक्ति की भावना अत्यंत मार्मिक रूप में थी। इसमें लेखक प्रश्न उठाता है कि संसार का अनमोल रत्न क्या है? कथा के माध्यम से विभिन्न पात्रों की स्थितियों को चित्रित करते हुए यह दर्शाया जाता है कि संसार का अनमोल रत्न उस पिता का अश्रु–बूंद नहीं है, जिसके पुत्र को मृत्यु–धन मिला है और न ही सती के शरीर की भस्म है, बल्कि खून का वह आखिरी बूंद है जो देश की आजादी के लिए गिरे। देशभक्ति की क्राँतिकारी भावना के कारण 'सोजे वतन' की सारी प्रतियाँ जब्त कर जला दी गयी। अंग्रेजों के खुफिया पुलिस ने यह सूचना दी कि सरकार के ही एक सेवक धनपत राय का साहित्यिक उपनाम नबाब राय है। फलस्वरूप धनपत राय कलक्टर के यहाँ तलब किये गए। इस घटना का उल्लेख प्रेमचंद इस प्रकार करते हैं–

'एक दिन मैं रात को अपनी रावटी में बैठा हुआ था कि मेरे नाम जिलाधीश का परवाना पहुँचा कि मुझसे तुरन्त मिलो। जाड़ों के दिन थे। साहब दौरे पर थे। मैंने बैलगाड़ी जुतवाई और रातों–रात तीस–चालीस मील तय करके दूसरे दिन साहब से मिला। साहब के सामने 'सोजे वतन' की एक प्रति रखी हुई थी। मेरा माथा ठनका। उस वक्त नबाब राय नाम से लिखा करता था। मुझे इसका कुछ– पता मिल चुका था कि खुफिया पुलिस इस किताब के लेखक की खोज में है।

साहब ने मुझसे पूछा– यह पुस्तक तुमनें लिखी है ?

मैंने स्वीकार किया।

साहब ने मुझसे एक–एक कहानी का आशय पूछा और अन्त में बिगड़कर बोले– 'तुम्हारी कहानियों में सीटीजन भरा हुआ है। अपने भाग्य को सराहो कि अंग्रेजी अमलदारी में हो। मुगलों का राज होता तो तुम्हारे दोनों हाथ काट लिए जाते। तुम्हारी कहानियाँ एकांकी है, तुमने अंग्रेजी सरकार की तौहीन की है। '[1]

'सोजे वतन' के प्रकाशन के बाद प्रेमचंद एक देशभक्त कहानीकार के रूप में आ गये। इस संदर्भ में डा0 मदनलाल मधु कहते हैं– 'राजनीतिक चेतना के फलस्वरूप प्रेमचंद सामाजिक उत्थान से सम्बन्धित विषय–वस्तुओं घेरे से बाहर निकलकर स्वतंत्रता सेनानियों की पांत में आ खडे हुए और अपनी कलम से आजादी की लड़ाई में हिस्सा लेने लगे। राष्ट्र की राजनीतिक चेतना में उन्हें लेखक के रूप में अपने कर्तव्य की चेतना करवाई और अपनी लेखनी से वह इस चेतना को जनसाधारण तक पहुंचाने लगे।'[2]

सरकारी सेवा में रहते हुए भी प्रेमचंद ने कभी अंग्रेजों की चापलूसी नहीं की। ये अंग्रेजों के दर्प एवं दुरभिमान के विरूद्ध सदा आत्मसम्मान के साथ रहे। एक बार की घटना का उल्लेख साहित्य अकादमी की पुस्तक 'प्रेमचंद' में इस प्रकार की गयी है– 'कलक्टर साहब के बंगले और नार्मल स्कूल के अहाते के दरमियान एक पुख्ता सड़क है। कलक्टर साहब रोजाना शाम को चार बजे के बाद नार्मल स्कूल की इसी सड़क पर चहल कदमी करते हुए गुजरते थे। सड़क के दक्षिण तरफ सेकेण्ड़ मास्टर मुंशी प्रेमचंद का क्वाटर था। एक रोज कलक्टर साहब ने मास्टर साहब को आवाज देकर हाथ के इशारे से बुलाया। ज बवह आ गये तो साहब ने कहा– मैं रोजाना इस वक्त टहनलने आया करता हूँ, आप मुझे सलाम करने के लिए कभी नहीं आते।'[3]

प्रेमचंद कई पत्र–पत्रिकाओं से सम्बद्ध रहे और इन सबो में राष्ट्रीय भावना उजागर हुई है। ये एक ओर उर्दू के 'आवाजे–खल्क' और 'जमाना' से जुडे तो दूसरी ओर हिंदी की प्रतिष्ठित पत्रिका 'मर्यादा', 'माधुरी', 'जागरण' और 'हंस' से। 'जमाना' में राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं पर विचार करते हुए इन्होनें लिखा– 'उन्नीसवीं सदी में एक बार आजादी की हवा चली तो इटली फ्रांस, स्विटजरलैण्ड़, संयुक्त राष्ट्र अमेरिका आदि देशों को आजाद कर दिया। इस हवा का असर यूरोप तक ही सीमित रहा, किन्तु बीसवीं सदी के आरम्भ में जो हवा चली है, वह अपेक्षकृत बहुत ज्यादा स्वास्थप्रद और शक्तिशाली है। इस थोडी सी अवधि में उसने फारस को आजाद कर दिया है और अब खबरें आ रही है कि तुर्की की भूमि– पुरानी हड्ड़ियों में भी उसने रूह फूंक दी। सन् 1930 में 'मर्यादा' पत्रिका के संपादक सम्पूर्णानन्द को जेल की सजा हो गयी। सम्पूर्णानन्द के जेल जाने के बाद प्रेमचंद इसके सम्पादक बने। इस पत्रिका के माध्यम से प्रेमचंद नं आजादी के संदेश एवं अंग्रेजों के अत्याचार को जन–जन तक पहुंचाया। उन्होंने गांधीजी के विचारों को प्रचारित–प्रसारित किया। सत्य, अहिंसा आदि पर लेख लिखे। अंग्रेजों के अत्याचार का विरोध करते हुए इन्होंने 'मर्यादा' में लिखा– 'जहाँ कहीं पुलिस के

अत्याचार या नौकरशाही के निरंकुशतापूर्ण हस्तक्षेप में कोई दंगा हो जाता है तो तुरन्त इसका इल्जाम असहयोगियों के सिर पर थोप देते हैं और दंगे का प्रमाण स्वरूप पेश कर देते हैं, वह असहयोगी नेताओं की शांति–प्रतिज्ञाओं पर जरा भी ध्यान नहीं देते।'[5] इसी पत्र में इन्होंने देशवासियों को प्रोत्साहित करते हुए कहा– 'हमने संसार की सबसे शक्तिशाली साम्राज्य से लडाई ठानी है। इस संग्राम में हमें न जानें कितनी कुर्बानियाँ देनी पड़ेंगी, न जाने कितनी बार परास्त होना पड़ेगा, लेकिन हमें आशा है कि भारत–संतान अविरल उद्योग और कर्मपरायणता से अपने लक्ष्य की ओर बढ़ती जायेगी। काम कठिन है, पर असाध्य नहीं। याद रखिये, हमें अंग्रेज जाति से स्वराज लेना नहीं है, हमें अपने ही भाइयों से, अपने ही देश–बन्धुओं से स्वराज लेना है, हमें अपनी शक्तियों नौकरशाही से सत्याग्रह करने में नहीं, अपने भाइयों से सत्याग्रह कराने में लगानी चाहिए। जन–सम्मति को अपनी ओर फेर लेना स्वराज प्राप्ति का प्रमुख साधन है।'[6]

प्रेमचंद 'जागरण', पत्रिका से भी जुडे। 'जागरण' में ही इनकी कहानी 'ठाकुर का कुआँ' छपी। इसके माध्यम से प्रेमचंद ने अंग्रेजो के शोषण, अत्याचार, फूट डालो और शासन करो की नीति कर विरोध किया। इसके बाद प्रेमचंद ने 'हंस' पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ किया। इस पत्रिका के माध्यम से इन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की विविध घटनाओं एवं प्रसंगों को जनता तक पहुंचाया। इसमें उन्होंने साइमन कमीशन, गांधी–इरविन समझौता सविनय अविज्ञा आन्दोलन आदि पर कई लेख लिखे। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की लहर एवं साहित्याकरों की स्थिति पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने लिखा– 'साहित्यकार बहुदा अपने देशकाल से प्रभावित होता है। जब कोई लहर देश में उठती है, तो साहित्यकार से अविचलित रहना असम्भव हो जाता है।'[7]

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का प्रभाव प्रेमचंद के उपन्यासों पर भी दिखलाई देता है। उस समय गांधीजी के नेतृत्व में आजादी की लडाई लड़ी जा रही थी। गांधीजी ने 'अंग्रेजो भारत छोड़ो' का नारा दिया। साथ ही, देशवासियों के लिये अनेक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। उन्होंने सत्य, अहिंसा, सविनय अविज्ञा आंदोलन, हिन्दु–मुस्लिम एकता, अछूतोद्धार, स्त्री की स्थिति में सुधार, बुनियादी शिक्षा, चरखा, तकली, खादी, स्वदेशी आन्दोलन, समाज के प्रति सेवा भाव आदि पर बल दिया। प्रेमचंद के प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कर्मभूमि, वरदान, सेवासदन, गबन, गोदान सभी में राष्ट्रीय भावना की अभिव्यक्ति कहीं प्रत्यक्ष तो कहीं परोक्ष रूप से हुई है। इस दृष्टि से 'कर्मभूमि' उपन्यास सर्वश्रेष्ठ है। इसमें गांधीजी के कार्यक्रम तकली, चरखा, खादी आदि का स्पष्ट उल्लेख है। उपन्यास का प्रमुख पात्र अमरकान्त चरखा चलाता है और खादी बेचता है। अमरकान्त और सलीम की मित्रता हिन्दु–मुस्लिम एकता का संदेश देती है। अस्पृश्यता–निवारण के लिए प्रो0 शांति कुमार और सुखदा आगे आते हैं। अमरकान्त, प्रो0 शांति कुमार और सुखदा मिलकर हरिजन बस्ती में कार्य करते हैं। वे अछूतों को मन्दिर में प्रवेश दिलाने में सफल होते हैं। अछूतों के उद्धार के लिए वे मद्य–निषेध कार्यक्रम बनाते हैं। वे उन्हें शिक्षा देते हैं कि शराब पीना, जुआ खेलना, मांस खाना ये सब बुरी बाते हैं और पैसे का दुरूपयोग है। इससे स्वास्थय और धन दोनों की बर्बादी होती है।

गांधीजी ने स्त्रियों की स्थिति पर बल दिया तो प्रेमचंद ने 'कर्मभूमि' उपन्यास के माध्यम से इसमें स्फूर्ति प्रदान की। 'कर्मभूमि' की नारी सजग और कर्तव्यनिष्ठ है। सुखदा नौकरी करती है, और राष्ट्रीय आन्दोलनों में भाग लेती है। वह शिक्षित और आत्मनिर्भर है। अमरकान्त से उपेक्षित होने पर सुखदा कहती है– 'एक मैं कुल मर्यादा के नाम को रोया करूं, लेकिन यह अत्याचार बहुत दिनों तक न चलेगा। अब कोई इस भ्रम में न रहे कि पति चाहे जो करे, उसकी स्त्री उसके पाँव धो–धोकर पीयेगी, उसे अपना देवता समझेगी, उसके पाँव दबायेगी और वह उससे हंसकर बोलेगा तो अपने भाग्य को धन्य मानेगी। वह दिन बदल गये।' 'नैना' ऐसे पुरूष को अपना स्वामी नहीं कहना चाहती जो केवल स्त्री में केवल रूप देखना चाहता है। सुखदा के जेल जाने के बाद नैना आन्दोलन का नेतृत्व संभालती है। अंग्रेजों के बलात्कार की शिकार 'मुन्नी' में प्रेमचंद डॉक्टर शांति कुमार के मुख से कहलवाते हैं– 'मुल्क की हिफाजत करेंगे हम और तुम और मुल्क के दस करोड़ जवान, जो अब बहादुरी और हिम्मत में दुनिया की किसी कौम से पीछे नहीं है उसी तरह, जैसे हम और तुम रात को चोरों के आ जाने पर पुलिस को नहीं पुकारते, बल्कि अपनी–अपनी लडकियाँ लेकर घरों से निकल पड़तें हैं।'[8]

'कर्मभूमि' उपन्यास में जज साहब भी राष्ट्रीय आन्दोलन से प्रभावित नजर आते हैं।' जज साहब सांवलं रंग के नाटे, चकले, बृहदाकार मनुष्य थे। ..... पहले यह महाशय राष्ट्र के उत्साही सेवक थे और कांग्रेस के किसी प्रांतीय जलसे के सभापति हो चुके थे। पर इधर तीन साल से जज हो गये थे। अब वह राष्ट्रीय आन्दोलन से पृथक् रहते थे, पर जानने वाले जानते थे कि वह अब भी पत्रों में नाम बदलकर अपने राष्ट्रीय विचारों का प्रतिपादन करते रहते हैं।'[9] 'रंगभूमि' उपन्यास का प्रमुख पात्र सूरदास है। उसे अपने जन्मभूमि से अपार लगाव है। वह इसे बचाने के लिये संघर्ष करता है। वह कहता है– 'हम जो सत्तर पीढ़ियों से यहाँ आबाद हैं, निकाल दिये जाएं और दूसरे यहाँ आकर बस जाएँ, यह हमारा घर है, किसी के कहने से छोड़ नहीं सकते। जबरदस्ती जो चाहे, निकाल दे, न्याय से नहीं निकाल सकता। तुम्हारे हाथ में बल है, तुम हमें मार सकते हो, हमारे हाथ में बल होता तो हम तुम्हें मारते यह तो कोई इंसाफ नहीं है।'[10]

कुंअर भरत सिंह जमींदार हैं। यद्यपि वे राष्ट्रभक्त हैं परन्तु परिस्थिति से विवश होकर निराश हो चुके हैं। वे कहते हैं– 'जिस राष्ट्र ने एक बार अपनी स्वाधीनता खो दी, वह फिर उस पद को नहीं पा सकता। दास्तां ही उसकी तकदीर हो जाती है।'[11] डा0 गांगुली अंग्रेजी शिक्षा से लैश शिक्षित भारतीय समाज के प्रतिनिधि हैं। वे गवर्नर की काउंसिल के सदस्य है। शुरू में उन्हें भरोसा था कि वे भारत का उद्धार करेंगे। जिंदगी के अंतिम पड़ाव पर पहुंचकर वे इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि अंग्रेजी राज की मंशा हमारे उपर अनन्त काल तक शासन करने की है। डॉ0 गांगुली के इस मोहभंग की कथा, उस समय के शिक्षित अंग्रेजी मानसिकता वाले लोगों पर बिल्कुल सटीक लगती है। राष्ट्रीय भावना के परिप्रेक्ष्य में प्रेमचंद का यह चुटीला व्यंग्य अत्यन्त प्रभावोत्पादक है।

अंग्रेजों के अत्याचार एवं शोषण नीति का विरोध प्रेमचंद 'सेवा सदन' उपन्यास में भी करते हैं। इस उपन्यास में उत्तर प्रदेश के मुगलसराय स्टेशन के एक दृश्य का वर्णन 'शांता' इस प्रकार करती है– 'उसके देशवासी सिर पर बड़े–बड़े गठठ्र लादे संकरे द्वार पर खड़े हैं और बाहर निकलने के लिए एक–दूसरे पर गिर पड़ते हैं। एक दूसरे तंग दरवाजे पर हजारों आदमी खड़े अंदर जाने के लिए धक्का–मुक्की कर रहे हैं। लेकिन दूसरी ओर एक चौडे दरवाजे से अंग्रेज लोग छड़ी घुमाते कुतों को लिये आते–जाते हैं।'[12] 'प्रेमाश्रम' किसानों के संघर्ष की कथा है, पर इसमें भी गांधीवादी प्रभाव है। 'प्रेमाश्रम' का बलराज न्याय के लिए संघर्ष उतारू है और जेल जाने से नहीं डरता है। वह कहता है– 'यही न होगा कैद होकर जेल चला जाउंगा। इससे कौन ड़रता है ? महात्मा गांधी भी तो कैद हो आये हैं।'[13]

प्रेमचंद के 'वरदान' उपन्यास का प्रमुख स्वर राष्ट्रीय भावना ही है। देवी और सुवामा के संवाद में राष्ट्रीय भावना देखते ही बनती है। देवी के प्रश्न सपूत किसे कहते हैं, का उत्तर देते हुए सुवामा कहती है– 'जो अपने देश का उपकार करे'। उपन्यास में देशप्रेमी बालाजी के आगमन के समय के दृश्य में भी राष्ट्रीय भावना है–'सड़क के दोनों पार्श्व में झण्ड़े और झाड़ियाँ लहरा रही थी, गृहद्वार फूलों की माला पहने स्वागत के लिये तैयार थे, क्योंकि आज उस स्वदेश–प्रेम का शुभ आगमन है, जिसने अपना सर्वस्व देश के हित में बलिदान कर दिया है।'[14]

'गोदान' प्रेमचंद का सर्वश्रेष्ठ और अंतिमपूर्ण उपन्यास है। यह कृषक जीवन की त्रासदी है। यहाँ भारतीय नेताओं और जमींदारों को लगता है कि अब अंग्रेजों का राज समाप्त हो जायेगा। फलतः को को कुछ जमींदार एवं नेता ढ़ोंगी भी होने लगे। प्रेमचंद ने इनके ढ़ोंग एवं झूठी राष्ट्रीयता को बेनकाब कर दिया है। 'गोदान' के राय साहब ऐसे ही जमींदार है– 'पिछले सत्याग्रह संग्राम में राय साहब ले बड़ा यश कमाया था। कौंसिल की मेम्री छोड़कर जेल चले गये थे। तब से उनके इलाके के असामियों को उनसे बड़ी श्रद्धा हो गयी थी। यह नहीं कि उनके इलाके में असामियों के साथ कोई खास रिआयत की जाती हो या डांड और बेगार की कड़ाई कम हो, मगर यह सारी बदनामी मुख्तारों के सिर जाती थी। ..... राय साहब राष्ट्रवादी होने पर भी हुक्काम से मेल–जोल बनाए रखते थे।'

इस प्रकार प्रेमचंद ने अपनी रचनाओं के माध्यम से भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को गति दी, जनता के मनोबल को ऊँचा उठाया और ब्रिटिश साम्राज्यवाद की जड़ें हिला कर रख दी।

संदर्भ सूचीः

1. प्रेमचंद, प्रकाशचन्द्र गुप्त, पृ0 21 से उदधृत।
2. गोर्की और प्रेमचंदः दो अमर प्रतिभाएं, डा0 मदन लाल मधु, पृ0 115।
3. प्रेमचंद, प्रकाशचन्द्र गुप्त, पृ0 30।
4. विविध प्रसंग, खण्ड़– 1, अमृतराय, पृ0 23
5. विविध प्रसंग, खण्ड़–2 अमृतराय, पृ0 41
6. विविध प्रसंग, खण्ड़–2 अमृतराय, पृ0 36
7. हंस, अप्रैल 1932, पृ0 40

8. कर्मभूमि, प्रेमचंद, पृ0 62
9. कर्मभूमि, प्रेमचंद, पृ0 51
10. कर्मभूमि, प्रेमचंद, पृ0 385
11. कर्मभूमि, प्रेमचंद, पृ0 139
12. कर्मभूमि, प्रेमचंद, पृ0 194
13. कर्मभूमि, प्रेमचंद, पृ0 22
14. कर्मभूमि, प्रेमचंद, पृ0 120
15. कर्मभूमि, प्रेमचंद, पृ0 02